एवमेतद्यथात्थ त्वमात्मानं परमेश्वर।
द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम।।३।।

एवम्=ऐसा; **एतत्**=यह; **यथा**=जैसा; **आत्थ**=कहते हैं; **त्वम्**=आप; **आत्मानम्**=अपने को; **परमेश्वर**=हे परमेश्वर; **द्रष्टुम्**=देखना; **इच्छामि**=चाहता हूँ; **ते**=आपके; **रूपम्**=रूप को, **ऐश्वरम्**=दिव्य; **पुरुषोत्तम**=हे पुरुषोत्तम।

अनुवाद

हे परमेश्वर! हे पुरुषोत्तम! यद्यपि यहाँ अपने सामने मैं आपके स्वयं रूप का दर्शन कर रहा हूँ, फिर भी हे प्रभो! आपका वह रूप देखना चाहता हूँ, जिससे आप इस सृष्टि में प्रविष्ट हुए हैं। विभो! मैं आपका वही रूप देखना चाहता हूँ।।३।।

तात्पर्य

श्रीभगवान् पूर्व में कह आये हैं कि उन्होंने अंशरूप से प्राकृत ब्रह्माण्ड में प्रवेश किया है; इसी कारण इस सृष्टि की उत्पत्ति और स्थिति है। जहाँ तक अर्जुन का सम्बन्ध है, उसे श्रीकृष्ण के वचनों में लेशमात्र संशय नहीं है। परन्तु श्रीकृष्ण को साधारण मनुष्य मानने वाले भावी मनुष्यों में श्रीकृष्ण साक्षात् भगवान् हैं, यह निष्ठा जागृत करने के लिए वह उनके विश्वरूप को प्रत्यक्ष देखना चाहता है। वह देखना चाहता है कि ब्रह्माण्ड से असंग होने पर भी श्रीकृष्ण उसमें किस प्रकार क्रियाशील हैं। श्रीकृष्ण से अर्जुन का यह निवेदन गूढ़ार्थ रखता है। श्रीकृष्ण स्वयं भगवान् हैं और इस कारण अर्जुन के भी अन्तर्यामी हैं। अतएव वे अर्जुन की वाँछा को जानते हैं और समझ सकते हैं कि अर्जुन में निजी रूप से विश्वरूपदर्शन की कोई विशेष इच्छा नहीं है। वह उनके कृष्णरूप के दर्शन से पूर्ण तृप्त है। वे जानते हैं कि अन्य मनुष्यों में वे भगवान् हैं, इस प्रकार का विश्वास उत्पन्न करने के उद्देश्य को लेकर ही अर्जुन उनके विश्वरूप दर्शन के लिय उत्कण्ठित है। उसे अपने लिए श्रीकृष्ण की भगवत्ता का कोई प्रमाण नहीं चाहिए। श्रीकृष्ण जानते हैं कि अर्जुन विश्वरूप के दर्शन से एक कसौटी स्थापित करना चाहता है, क्योंकि भविष्य में अपने को भगवत्-अवतार कहने वाले धूर्तों की बहुलता होगी। अतः जनता सावधान रहे, जो अपने को कृष्ण बताता है, उसे जनता के सामने अपने दावे को प्रमाणित करने के लिये विश्वरूप दिखाने को तैयार रहना चाहिये।

मन्यसे यदि तच्छक्यं मया द्रष्टुमिति प्रभो।
योगेश्वर ततो मे त्वं दर्शयात्मानमव्ययम्।।४।।

मन्यसे=(आप) समझते हैं; **यदि**=यदि; **तत्**=वह; **शक्यम्**=सम्भव; **मया**=मेरे द्वारा; **द्रष्टुम्**=देखना; **इति**=इस प्रकार; **प्रभो**=हे प्रभो; **योगेश्वर**=हे सम्पूर्ण योग-शक्ति के स्वामी; **ततः**=तो; **मे**=मुझे; **त्वम्**=आप; **दर्शय**=दर्शन कराइये; **आत्मानम्**=अपने स्वरूप को; **अव्ययम्**=अविनाशी।